Journal Literary Aesthetics
Volume No: 12, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 89-98

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

# चित्रा मुद्गल की कहानियों में वर्ग-संघर्ष

**डॉ. मुकेश कुमार महतो**

पूर्व शोधार्थी, हिन्दी विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

---

वर्ग तथा वर्ग-संघर्ष की अवधारणा कार्ल मार्क्स की है, जिसमें उन्होंने दुनिया भर के लोगों को दो ही वर्गों में विभाजित किया है- शोषक और शोषित। इनके बीच सदैव संघर्ष होता रहता है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान में इस तरह के संघर्ष की अत्यंत साकारात्मक भूमिका होती है। चित्रा जी को वर्ग-संघर्ष का जीवंत अनुभव है। मालिक हो या मालकिन, यही चाहते हैं कि नौकर उसकी मर्जी से चलें। यदि वे नहीं चलते उन्हें काम से हटाकर अपनी भड़ास निकाल लेते हैं। वर्तमान समय में शहर के घरों में काम करने वाली बाइयाँ भी काफी तेज हो गई हैं। वे जानती है कि बड़े लोगों को उनके बिना गुजारा नहीं, अतः वे अब फालतू बात अथवा ऊँच-नीच की बातें नहीं सहती। 'स्टेपनी' कहानी में मिसेज खन्ना नताशा से सोफे की जगह नीचे बैठकर सब्जी काटने के लिए कहती है, यह उसे अच्छा नहीं लगता। वह उन्हें जवाब दे देती है। परिणामस्वरूप वे उसे अपने यहाँ से काम से हटा देती हैं, इसके साथ ही और लोगों को भी उसके खिलाफ इस तरह भड़काती हैं, ताकि वह भी उसे काम से हटा है। जाड़े के समय में कोई भी स्त्री बिना माइयों के नौकरी नहीं कर सकती। इसीलिए इनकी मांग निरंतर बढ़ती जा रही है और इनके नाज-नखरे भी बढ़ते जा रहे हैं। तभी तो नताशा श्रीमती खन्ना के कहने पर कह देती है, "सोचना क्या है बीबीजी, पहली से आप कोई और इंतजाम कर लेना। मेहनत करते हैं, मेहनत में जात-पाँत कैसी?"[2] जब आभा नताशा को लेकर विनोद से बात करती है तो वह उसे नौकरानियों के यथार्थ बताते हुए कहता है, "दिमाग से काम लो, अम्मा! बहकावे में मत आओ! अच्छी तरह से जानती हो तुम कि इधर मयूरविहार में बाईयों की कितनी किल्लत हो रही है।...लोग चाहते हैं कि इधर तुम उसे निकालो, उधर वे उसे अपने घर के लिए फाँस लें।"[3] यद्यपि अंतर्द्वंद से घिरी आभा एक बार तो उसे निकालने की सोचती है, लेकिन चित्त के शांत हो जाने पर वह सारी स्थिति का आकलन कर इस निष्कर्ष पर पहुँचती है, "शायद कोई विकल्प नहीं है उसके हिस्से।"[4] कर्मचारियों में बहुत एकता होती है, इसी कारण ये मालिक की परवाह कम हो करते हैं, क्योंकि "मजाल है जो उसके अलावा कोई अन्य जमादारिन जीना चढ़ जाए... इसी एका के चलते कोठीवालों की दाल नहीं गलती।"[5]

आज के उच्च वर्गीय समाज में ब्रिज खेलना, शराब पीना, मित्रों की पत्नियों के साथ अभद्र व्यवहार करना जैसी बातें बुरी नहीं मानी जाती। बावजूद इसके कहानी में गोयल को भी यह सब बहुत


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

पसंद है, "जिंदगी जीने के उसके अपने तेवर थे। क्लब में रात एक-दो बजे तक 'ब्रिज' जमा रहता। साथ पीना-पिलाना भी खाना भी ज्यादातर किसी बड़े होटल में खाया जाता या फिर किसी दोस्त के घर लौटकर।"[6] जो पत्नी पति की इन बातों को स्वीकार कर लेती है, तब तो ठीक, अन्यथा वैसी ही लड़ाइयाँ होती हैं, वैसी ही मारपीट होती है, जैसी गोयल और प्रीति के बीच होती हैं और अंत में प्रीति गोयल से तलाक लेने का निर्णय लेती है। महानगरीय जीवन और आधुनिक उच्च वर्गीय जीवन के यथार्थ को बड़ी ही सजीवता से अपनी वापसी कहानी में उजागर किया गया है। बड़े-बड़े में बालों में सबके पास अलग-अलग कमरे होते हैं परिणामस्वरूप पारम्परिक संबंध कम होती जा रही है जैसे कि शकुन स्वयं कहती है, "उसे क्या पता था कि अलग कमरे पाकर एक ही घर में कई-कई घर उग आएँगे।"[7] बड़े घरों का एक सच यह भी है कि बच्चे रात में देर से सोते हैं और सबरे देर से जागते हैं। ऑफिस जाने के समय घर में चारों ओर से कैसी मारा-मारी होती है, एक झलक, "तीनों बच्चे एक साथ उठते-किसी को हल्की चाय चाहिए। किसी को चौक कॉफी। किसी को बाथरुम में गीजर से गरम पानी।"[8]

आजकल माता-पिता की संपत्ति पर लड़के लड़कियों का बराबर का हक होता है, सरकार द्वारा भी इस संबंध में कानून बना दिया गया है। सन्निपात कहानी में इस बात को वर्णित किया गया है। उच्चवर्गीय ठाकुर साहब को जब इस कानून के बारे में बताया जाता है, वे कहते हैं, "सरकार का काम है, विदेशों की नकल कर आए रोज नए-नए कायदे-कानून बनाना अमल कौन करता है? फिर वैसवाई के तेवर जुदा ठहरे। यहाँ सरकार के कानून नहीं चलते चलते हैं भूपति क्षत्रियों के परंपरागत नियम-कायदे।"[9] इस प्रकार बड़े-बड़े पैसे वालों द्वारा जिस प्रकार कानून की धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं, इसका साफ पता चलता है।

हमारे देश में धर्म के नाम पर होने वाले दंगे का कोई भी कारण हो, कुछ भी हो, धर्म के नेता बनने के शौकीन लोग और साधारण घटना को अपने तरीके से तोड़-मरोड़ कर इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि सामान्य-सी बात बहुत बड़ी बनकर कभी-कभी सांप्रदायिक हिंसा में परिवर्तित इसी है। चित्रा मुद्गल समाज के इस सबसे अच्छी तरह अवगत है। यह भी है कि एक के लोग एक ही कॉलोनी में रहना चाहते हैं। यदि कहीं एक धर्म के लोग ज्यादा है और दूसरे धर्म के लोग कम है, तो सांप्रदायिक की संभावना बढ़ जाती है। बाद में मिस्टर पुरोहितजी अपने लिए खरीदना चाहते हैं,उसे पिछले साल के दंगों की याद दिलाता है और यह भी सूचित करता है कि आने वाली रामनवमी पर ऐसे दंगों के दोबारा भड़कने की आशंका है। इसी के चलते दूसरा मजहबी अपना मकान सस्ते में देकर अपने लोगों की में चले जाना चाहता है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

'लपटें' कहानी में सांप्रदायिक दंगों का सच दिखाया गया है। कहानी में परिवार बंबई का नहीं है, कहीं बाहर से आकर यहाँ बसा है। पिछले साल भी सांप्रदायिक वातावरण होने के कारण उसके बेटे मुनुआ की लपटों की भेंट चढ़ा दिया गया था, "हमने अपनी नंगी आँखों से शेट्टी टीवी वाले की दुकान लूटने के बाद सत्तार चाली के छोकरों को मुनुआ को दबोच लपटों में फेंकते हुए देखा है... सतार वाली वाले पार साल इन्हीं की पार्टी के लिए चंदा माँगने नहीं आए थे।"[10] इस प्रकार कहानी में सांप्रदायिकता की समस्या को लेखिका उजागर करती है।

आर्थिक विपन्नता मानव समाज की सबसे जटिल समस्या है। इसे अनेक समस्याओं की जड़ कह सकते हैं। आर्थिक विपन्नता का सबसे महत्वपूर्ण कारण है-बेरोजगारी। पहले तो गाँव से लोग यह सोचकर ही आते थे कि शहर में जाकर उन्हें रोजगार अवश्य ही मिल जाएगा और उन्हें मिल भी जाता था, लेकिन अब महानगर मैं भी रोजगार मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। 'ठेकेदार' कहानी में रोजगार की तलाश में गाँव से शहर में आए छेदी को अनेक प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़ती है। स्टोव की बुझती आँच में रोटी पूरी तरह से सिक नहीं पाती। परिणामस्वरूप रामसुर कक्का और छेदी को कच्ची -पक्की रोटी खानी पड़ती है। जब उसे रोजगार नहीं मिलता, रामेसुर कक्का द्वारा दिए गए ज्ञान के आधार पर वह रिक्शा चलाने की बात सोचता है। किंतु आजकल रिक्शा चलाना भी कम मुसीबत का काम नहीं है। ठेकेदार के यहाँ पैसे डिपाजिट कराना, फिर हर रोज का किराया समय पर दे जाना, चाहे रिक्शे से कोई आमदनी हो या न हो डिपाजिट की रकम 1500रु. तथा प्रति सैकड़ा भारी सूद पर उठाकर ठेकेदार के यहाँ जमा करने के बाद रिक्शे की व्यवस्था कर छेदी मयूर विहार के मैट्रो स्टेशन पर जा खड़ा होता है। सुनहरे सपनों को मन में बसाए, लेकिन पुलिस को पैसा न मिलने पर, "खाकी वर्दी आपा खो बैठी- 'कमीने कहीं के, सरकार से जबानदराजी की हिमाकत' हुमक कर वर्दी ने एक डंडा उसकी बांई टाँग पर मारा। दूसरा वार किया रिक्शे के हैंडिल पर।"[11]

ऐसी घटनाएँ महानगरों में आमतौर पर देखने को मिल जाती हैं। एक तो रोजगार के अवसरों का न बढ़ना, दूसरे जनसंख्या में निरंतर होती जा रही वृद्धि तथा साथ ही लड़कियों के रोजगार करने पर लड़कों के लिए रोजगार के अवसर में कमी आ रही है। ऐसी स्थिति में 'लिफाफा' कहानी में अशोक यही सोचता है, "कमबख्त घरों में बंद चूल्हा -चौका निपटा रही होतीं तो आज लड़के निठल्ले, बेरोजगार न घूम रहे होते।"[12]

हमारे देश में गरीबी और बेरोजगारी भीषण समस्या का रूप ले चुकी है। लोग आधी मजदूरी मैं भी काम करने को तैयार हैं लेकिन यह भी नहीं मिलती है। 'भूख' कहानी में इसका चित्रण करते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि बेरोजगारी हमारे देश में चरम सीमा पर है. "बुरा वक्त एक काम, दस


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

मजूर काम मिले भी तो कैसे? ऊपर से मुसीबत का रोना एक से एक बईमान ओढ़कर निकलते। आधी से जास्ती मजूर इधर आधी दहाड़ी पर काम करते। पूरी, दिहाड़ी कौन देता? टिरेनिंग में सरकार देती।"[13] एंटीक पीस में बहुत कोशिशों के बाद भी को नौकरी नहीं मि पाती। "वह" की बेरोजगारी के कारण ही उसके लकवाग्रस्त पिता को नहीं दिखाया, जिसका पिछले हफ्ते अड़चन रही हिंदुजा की फीस, फीस के अलावा डॉक्टरों के बेमुरव्वत अनेक किस्म के प्रयोगवादी जाँच के खर्चे।"[14]

महानगरों में निम्नवर्गीय परिवार की क्या स्थिति होती है, इसका सजीव वर्णन है 'केंचुल' कहानी में। पत्नी रात-दिन खटती है, लेकिन पति को शराब पीने से होश नहीं मिलता। कमला का पति विष्णु रात तो रात, दिन में भी शराब पीकर पड़ा मिलता है। काम से घर आकर जब वह उसे इस स्थिति में पड़ा देखती है, तो उसकी मानसिक स्थिति का बड़ा ही यथार्थ वर्णन, "इस स्थिति में उसे पारा चढ़ गया। हिकारत से थूक देने का मन किया। आदमी है मुरदार? पीना, पीना, सिर्फ पीना। घर को फूँक डाला। उसकी जिंदगी हराम कर दी।"[15] विष्णु के दिन-रात पीने और जुआ खेलने के कारण कमला का परिवार बरबाद हो जाता है। शराब पीते समय और जुआ खेलते समय अपने बड़े बेटे रत्नू को अपने साथ रखने पर किसी बात पर आपस में झगड़ा हो जाने के कारण किसी के द्वारा उसकी हत्या कर दी जाती है। विष्णु के द्वारा ही किसी बात पर अत्यधिक पिटाई करने के कारण उसका छोटा बेटा गोविंदा घर छोड़ कर चला जाता है, यह सब याद आ जाने के कारण कमला को विष्णु से नफरत हो जाती है, "पिच से थूक ही दिया औंधी देह पर। घृणा के उबाल पर संयम टूट गया।"[16]

महानगरों में छोटे-छोटे गरीब बच्चे पढ़ते तो हैं, लेकिन स्कूल खत्म होने के बाद गलियों में खेलते रहते हैं। 'त्रिशंकु' कहानी में बंडू स्कूल से आने के बाद गली में खेलता रहता है। उसकी माँ घरों में काम करती है। उसका पति दिन-रात शराब पीकर अपनी बीवी को कूटता- पीटता रहता है। यह बात पास- पड़ोस के सभी लोग जानते हैं, तभी तो पास के दुकानदार भइया जी के शब्दों में, "तू कैसे आ गया रे, बंडू.... कहीं बाप ने कुटम्मस तो नहीं की महतारी (माँ) की ?... अक्खा झोपडपट्टी का ऐसन हाल वा... जोरु चार घरि चौका-बासन करति हय और इनके म घाटी साले... दारु पी पा के महरारु के हाड़-गोड़ तोरत हैं, राम-राम, कैसी जबराई।"[17] पिता के शराब पीकर आने के बाद माँ-बाप के बीच जब युद्ध हो व्याकुल लगता है, बाप माँ को कूटने लगता है तो बालक बड़ और उसकी बहन कमला, "आतंक से सहमे, अपनी दरी पर पड़े हुए, छाती में घुमड़ती, फूटने की। हिचकियों को होठों में भींच, विवश, मोम से टपकते रहते।"[18] समस्याओं की जननी गरीबी निम्न वर्ग की मुख्य समस्या होती है। गरीबी के कारण ही माँ घरों में बरतन माजती है और उसके बावजूद उसके पिता से पिटती है, इसी ग्र ही वह पढ़ाई छोड़ अपनी माँ को अच्छा जीवन देने के


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

लिए कई तरह के कारण काम करता है और अंत में सिनेमा की टिकट अनेक में बेचने का गलत धंधा भी अपना लेता है।

चित्राजी निम्न-वर्ग की गरीबी का बड़ा ही सजीव चित्रण करती हैं। 'बलि' कहानी में गरीब के बच्चों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने के कारण बदलती हुई स्थिति दिखाई है जो वर्तमान का सच है, "नए चलन के चलते लिखने-पढ़ने में दीदा लगा रहे चमरा टोले के लड़का उदंडई दिखाते हाथ में रेडियो लिए घूम रहे, लेकिन बूढ़ी हड्डियों से अब तलक मालिकों का लोना नहीं झड़ा।"[19] बेईमान कहानी में ट्रेनों में घूम-घूम कर पत्रिका बेचने वाले बच्चे की गरीबी का यथार्थ, "एक तो उसकी चार फुटी काया! ऊपर से दस किलो के लगभग पत्रिकाओं का बोझ लादे हुए उसके सुन्न पड़ते बाजू फेरी पूरी होते न होते कंधों से अलग होने लगते। सुतली से बँधी खाकी मैली निकर चार कदम चलने ही कमर पर टिकने से आँख दिखाने लगती स्टेशन पर पत्रिका बेचने दुकानदार उस बच्चे से पैसे कम मिलने पर क्या-क्या बोल जाता है, कैसे उस गरीब का शोषण करता है, इसका सजीव वर्णन है। पत्रिका विकती हैं" 17, हिसाब देता है वह 15 का, वह यह बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाता कि एक पत्रिका टिकट चेकर ने उठा ली, लेकिन डोंटकर पूछने पर जब यह बता देता है, तब दुकानदार किस तरह उसे झाड़ता है, "चिरौरी नहीं की, में मालिक नहीं, नौकर है, कहाँ से डाँड़ भरूँगा...अबे वाजिद अली की औलाद डिब्बे-डिब्बे टिकट बाबू मिलेंगे तुझे और तू उन सबको मुफ्त पत्रिका बाँटता फिरेगा? खैरात बाँटने निकलता है कि....[20] और फिर यह दुकानदार उसकी पुरानी बची हुई रकम में कमीशन जोड़कर तथा उसमें से दो पत्रिकाओं की कीमत काटकर बचे हुए इक्कीस रुपए उसके हाथ में पकड़ते हुए उसकी मजबूरी को समझते हुए भी उसे काम छोड़ देने के लिए कहता है। पत्रिका बेचैन वाला वह बच्चा बड़े ही खुशामदी स्वर में उसे मनाता है और दुकानदार के मान जाने पर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। छोटे-छोटे दुकानदार ही नहीं बड़ी-बड़ी कंपनी चलाने वाले मालिक भी अपने कर्मचारियों का शोषण करने से नहीं चूकते। बंद कहानी में बबई-बंद का ऐलान होने पर फिल्मी-पत्रिका 'मेनका के ऑफिस में काम करने वाले रमेश, हरीश और नवल रद्दी इकट्ठी कर और उसे बेचकर अपने पूरे दिन का खाने-पीने का खर्च चलाते हैं और अगले दिन मालिक मल्होत्रा द्वारा बेची हुई रद्दी का हिसाब पूछकर उन पैसों को वहाँ के कर्मचरियों के मेहनताने में बदल दिया जाता है और इस प्रकार उन कर्मचारियों का शोषण किया जाता है तो एक कर्मचारी नवल बंबई-बंद के बारे में यह सोचने के लिए विवश हो जाता है, "यह बंद न मराठियों का मद्रासियों के खिलाफ है, न एक जाति का दूसरी जाति के प्रति। यह उस जाति के खिलाफ है. जो स्वार्थी और संकीर्णताओं के चलते दूसरों का शोषण करती है और किसी भी जाति का मुखौटा ओढ़कर अपना चेहरा बदल लेती है। और यह मलहोत्रा भी..."[21] समाज का सच यही है। वह भी स्वयं को शोषित महसूस करता है और मल्होत्रा से बदला


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

लेने के लिए बीड़ी सुलगाकर, उसके एक-दो कश लेकर चुपके से 'मेनका' के बंडलों में खोंस देता है। प्रतिशोध की भावना ही विद्रोह का कारण बनती है। शोषण ही आक्रोश का जन्मदाता होता है।

"भूख" कहानी में तो लेखिका ने निम्न वर्ग की विपन्न ता की भीषण समस्याओं का चिट्ठा हो खोलकर रख दिया है। ऐसा कच्चा चिट्ठा वही खोल सकता है, जिसने नजदीक से इस वर्ग को देखा होगा। चौराहे पर गोद में लटकाए, रोते-पीटते छोटे बच्चों को लिए औरतों को भीख मांगते हम सबने देखा है। लेकिन इस सबके पीछे कितना बड़ा गैंग काम करता है, मासूम बच्चों का किस हद तक शोषण किया जाता है, मानवीयता इंसान में किस सीमा तक खत्म हो जाती है, यह कहानी में सब बातें सोचने के लिए विवश कर देती है। लक्ष्मा तो कलाबाई के यह कहने पर विश्वास कर लेती है कि इस छोटू को दूध-बिस्कुट मिल जाएगा, साथ ही दो रुपए मिलने से दोनों बड़ों के लिए भी खाने-पीने का इंतजाम हो जाएगा। यह सोचकर वह छोटू को भिखारिन जग्गूबाई को सौंप देती है। लेकिन वहाँ छोटू को कुछ खाने-पीने के लिए नहीं दिया जाता, उसकी आतें चिपक जाती हैं और बच्चा मर जाता है। जग्गूबाई छोटू को किराए पर क्यों ले जाती थी, इसका खुलासा कांवलेबाई के इस कथन से होता है, "अब रोने से क्या!....वो छिनाल बच्चे का पेट भरती तो बच्चा आराम से सोता, पिच्छू उसको भीक कौन देता? अरे, वो बच्चे को फक्त मुक्काच नई रक्खते, रोता नई तो चिकोटी काट-काट के रुलाते कि लोगों का दिल पिघलना... अभागिन, काय कूई दी उसको अपना छोटू रे।"[22] गरीबी इंसान को वह सब करने को मजबूर कर देती है जो उसने कभी सोचा भी न हो। इसी के कारण ही लक्ष्मा निराश होकर आत्महत्या का कदम उठाना चाहती है, पहले भी दो बार वह यह कदम उठाने की "ऐसे भरें या वैसे, मरेंगे जरूर एक दिन और वह भी हत्या ही होगी और वह पानी पेट की आं उनकी खुराक न देकर, उन्हें तरसा-तरसा कर मारना क्या हत्या नहीं।"[23] गरीबी के कारण ही भिक्षावृत्ति, पॉकेटमारी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हैं। चेहरे कहानी में बंबई महानगर के पश्चिमी रेलवे स्टेशन पर बहुत-सी पुरुष यात्रियों को पेंट और टखनों को छू-छू कर भीख माँगती हैं, जिसका परिणाम है कि पुरुष यात्रियों में सेक्स की भावना जाग्रत हो जाती है, उनका नाम उठकर भिखारिन के बच्चे या साथी उनकी जेब से पर्स साफ कर जाते हैं। साथ ही इस तथ्य को भी उजागर किया गया है कि रेलवे स्टेशनों पर भिखारियों की ही नहीं होती, इसके पीछे वहाँ के अधिकारियों की उनसे हफ्ता वसूली को मान भी होती है। वहाँ की पुलिस उनसे सख्ती इसलिए नहीं कर पाती क्योंकि में उन्हीं औरतों के पास जाकर अपनी हवश शांत करते हैं। इन सबकी मिलीभग से यात्री परेशान होते हैं।

गरीब-वर्ग का शोषण तो अमीर-वर्ग के द्वारा सदा से ही किया जाता रहा है। 'लेन' कहानी में जमादारिन महेंदरी अपने पति के छुरा लगने पर उसे अस्पताल में दाखिल करवाती है और इस


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

वजह से चार-पाच दिन काम पर नहीं जा पाती। अमर वर्ग की तरफ से कोई भी उससे उसके न आने का कारण नहीं पूछता, वरन उसके आते ही सब अपने-अपने काम बताने लगते हैं, जैसे वकीलनी कहती है, "जीने। बड़ी गंदी हो रही है, जमादारिन पाइप लगा छोड़ती हूँ, अपने-अपने दरवाजे डलवा ले सबसे! धुलाई कर डाल।"[24] उसके तन-मन की परवाह न करते हुए उससे पूरे जीने की धुलाई करवाते हैं। इसमें रिक्शे वालों का यथार्थ भी वर्णित कि है। रात-दिन रिक्शा चलाने के बाद बीड़ी तमाखू खाना-पीना तो इनके लिए आम बात है, इसके अलावा ये कई अन्य तरह का नशा भी करते हैं चाहे वह शराब का हो या अफीम का परिणामस्वरूप इनकी गरीबी दूर नहीं होती। एक दूसरा इनकी गरीबी के पीछे यह भी है कि रिक्शाचालक किराए का रिक्शा चलाते हैं, "यात्री मिले, न मिले, इससे रिक्शे के मालिक का क्या वास्ता! वह तो रिक्शे की वापसी के पर साथ ही पूरे दिन के ठहरे बारह रुपल्ली गिनवा लेता है।"[25]

आपराधिक मानसिकता के लोग बहुत दबंग होते हैं। जब वे किसी अपराध के तहत पकड़े जाते हैं, तो अपने दूसरे साथियों को पीड़ित लोगों को डराने- धमकाने के भेजते हैं। इसी कहानी में महेंदरी के पति को मारने वाले जब तीनों लोग पकड़ लिए जाते हैं, तो तीसरे आदमी को पहचानने से मना करवाने के लिए दो लोग महेंदरी के पास आते हैं। पहले तो वे लोग बड़ी नरमी से उससे बात करते हैं, "आप अगर उस हत्यारे को पहचानने से मुकर जाएँगी तो हम उसकी कीमत आपको चुका देंगे।...।"[26] आपके सामने ये पाँच हजार रुपए रखे हैं। उसे सुनकर महेंदरी को बहुत गुस्सा आता है और वह काफी ऊलजलूल बोलती है। ये दोनों उसकी बातों को सुन पहले तो मुस्कराते हैं और बाद में चेतावनी के स्वर में अपनी बात कुछ भी घटा, बहुत दुर्भाग्यवश ही घटा...लेकिन आगे जो कुछ घटेगा, उसकी जिम्मेदारी आप पर होगी। कहकर जाते हैं। महंदरी गरीबी के करण उनकी बात मानन के लिए बेवश हो जाती है।

महानगरों में प्रायः लोगों को स्थाई रोजगार नहीं मिल पाता, ऊपर से इन महानगरों के खर्चे भी अपनी ही तरह के होते हैं जिनके चलते व्यक्ति आर्थिक तंगी से रात-दिन घिरा रहता है। मामला आगे बढ़ेगा अभी कहानी में मोठ्या को सक्सेना साहब के यहाँ कार साफ करने की नौकरी मिलती है। यह मिसेज सक्सेना में अपनी माँ को महसूस करने लगता है जिसके कारण वह उनके घर के और काम भी करता रहता है। लेकिन जब यह बीमार पड़ता है तो सक्सेना उसका पैसा काट लेते हैं, उसके द्वारा इस बात का विरोध करने पर वे उसे मार-पीटकर बाहर निकाल देते हैं। उस समय मिसेज सक्सेना का कुछ भी न कहना उसे अखर जाता है। वह रोता-रोता यही सोचता है, "जबी झापड़ मारा...मेमसाब पासमेच खड़ी होती... धक्का देके बाहर किया... नई बोलने को सकती थी कि मैं ताप में होता?"[27] अत्यंत कुछ हुआ मोट्या उसी रात को सक्सेना साहब की गाड़ी को बेरहमी से पीट-पीट कर डिब्बा बना देता है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

अचानक कोई परेशानी आ जाने पर जब मालिक अपने अधीनस्थ का साथ नहीं देता, तो अधीनस्थ बेईमानी करने के लिए मजबूर हो जाता है। ब्लेड कहानी में ड्राइवर रामखिलावन की लड़की के पैर की हड्डी टूट जाती है, उस पर प्लास्टर चढ़वाना है, उसके लिए पैसे चाहिए। वह अपने मालिक के सामने पैसों की बात करता है जिसे उनके द्वारा टाल दिया जाता है। अब उसके सामने पैसों की व्यवस्था करने का बड़ा प्रश्न है, उस समय उसे जमाल द्वारा कुछ समय पहले की कही गई बात याद आती है, "अबे घनचक्कर, गाड़ी जल्दी-जल्दी गैराज भेजा कर!"[27] और यह सोचकर वह गैराज मालिक सरदारजी के पास जाकर अपनी समस्या को सुलझा लेता है और गैराज में जाकर पिछली सीटों की खिंची सिलाई ब्लेड से काटकर गाड़ी सरदार जी के गैराज में खड़ी कर देता है। कभी-कभी मालिकों का आचरण भी गरीब व्यक्ति को बेईमान बनाता है।

हमारे समाज में प्रायः देखा जाता है कि झोपड़पट्टी में रहने वाले गरीब तबके के लोग तो दूसरों की मदद के लिए आगे आ जाते हैं लेकिन जब लोगों का रहने का स्तर बढ़ जाता है, वे लोग मानवीय संवेदनाओं से दूर हो जाते हैं, जैसे सौदा कहानी में मंगला ही सोचती है, "झोंपड़पट्टी में थी तो मामूली-सी 'चीं-चीं' पर खोली में बंद अपने-अपने दुःख-सुख।"[28] इसी कहानी में गेंदा गरीबी से तंग आकर एक ड्राइवर के यह कहने पर, "हमरे संग सहर चल, अपने सेठ के घर नौकर रखवाय दंगे के लालच में वह उसके साथ आ जाती है। लेकिन वह यहाँ आकर उसे एक दलाल को बेच देता है और दलाल उससे धंधा करवाने के लिए मार-कुटाई भी करता है जिससे बचने के लिए वह मौका पाते ही खिड़की के रास्ते बाहर भाग जाती है रोज ही अखबारों में प्रकाशित होती रहती हैं।

गरीबी के कारण पति-पत्नी के संबंधों में भी कड़वाहट आ जाती है। यही कारण है कि कहानी में तांगा चलाने वाले असलम की पत्नी जुवेदा भूख के मारे जब बच्चों को तड़पता देखती है, तो वह असलम के सामने कहती है, "नामुरादो! कहाँ से लाऊँ दोनों जून तुम्हारे पेट में डालने को...एक मैं ही साबुत बची हूँ इस घर में, सो कहो तो अपनी बोटियाँ काट के चढ़ा दूँ हांडी में पकने को?"[29] गरीबी के कारण ही असलम में लालची प्रवृत्ति का जन्म होता है। घोड़ी सरवरी की बीमारी से हुई खराब हालत देख कर वह सोचता है कि तांगा खाली ही ले जाए लेकिन घर के रास्ते में इकलौती सवारी के मिलने पर वह अपने लालच पर नियंत्रण नहीं रख पाता और उसे बिठाकर रास्ते में उतार देता है। लालच के कारण ही वह ताग को कार से भिड़ा देता है ताकि वह घोड़ी की मौत का सौदा कर सके।

गरीबों का एक बड़ा सच यह भी है कि वहाँ स्त्रियाँ अधिक काम करती हैं और पुरुष ज्यादातर शराबी जुआरी होते हैं। गिल्टी रोजेस कहानी में गुनावाई का पति भी शराबी और जुआरी है और


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

यह सब ऐब वह घर में बैठकर ही करना चाहता है। जब गुनाबाई उससे इस प्रकार का व्यवहार घर में करने से मना करती है तो वह बेटियों के सामने ही उसे लात-घूसों से मारता है। जब उसका पति बड़ी बेटी से वेश्या जैसा कुकृत्य करवाने के बाद उस पैसे से शराब पीने चला जाता है, इससे पीड़ित होकर वह स्वयं तथा बच्चियों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आत्म हत्या और हत्या कर देना चाहती है। लेकिन बेटियाँ तो मर जाती हैं और वह बच जाती है। इस बात का उसे गहन पश्चाताप होता है। ऐसी घटनाएं प्रायः रोज अखवारों की खबर बनती हैं और बासी हो जाती हैं। समाज की नष्ट होती जा रही संवेदना इसके मूल में दिखाई देती है।

**संदर्भ- ग्रंथ सूची :–**

1. ज्योत्सना - सुमित्रानंदन पंत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1961, पृष्ठ-11
2. आदि- अनादि- 3, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ- 56
3. वही, पृष्ठ-61-62
4. वही, पृष्ठ- 64
5. आदि-अनादि- 2, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ- 139
6. आदि- अनादि -1, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ- 110
7. वही, पृष्ठ- 159
8. पेंटिंग अकेली है- चित्रा मुद्गल, पृष्ठ- 132
9. आदि- अनादि- 3, पृष्ठ- 131
10. आदि- अनादि- 2, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ - 133
11. पेंटिंग अकेली है- चित्रा मुद्गल, पृष्ठ- 40
12. आदि- अनादि-2, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ - 27
13. वही, पृष्ठ- 95
14. वही, पृष्ठ- 103
15. आदि- अनादि- 1, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ - 62
16. वही, पृष्ठ- 62
17. वही, पृष्ठ - 80


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

18. वही, पृष्ठ - 74
19. आदि- अनादि- 3, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ- 211
20. वही, पृष्ठ -71
21. आदि- अनादि- 2, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ- 49
22. वही, पृष्ठ- 108
23. वही, पृष्ठ- 102
24. वही, पृष्ठ- 130
25. वही, पृष्ठ- 139
26. वही, पृष्ठ- 147-48
27. वही, पृष्ठ- 148
28. वही, पृष्ठ- 225
29. वही, पृष्ठ,-231


© Copyright @ Authors